शिवशक्ति सरस्वती माँ

38. मम्मा दिव्यगुणों की सम्पूर्ण साक्षात् देवी थीं। उनके संकल्प चट्टान की तरह अडिग, बोल मीठे तथा सारयुक्त और कर्म श्रेष्ठ तथा युक्तियुक्त थे। मम्मा इतनी योगयुक्त, गम्भीर और शान्त रहती थीं कि उनके आस-पास के वातावरण में सन्नाटा छाया रहता था जो सभी को प्रत्यक्ष महसूस होता था। ऐसा लगता था कि मानो वह कोई चलता-फिरता लाइट हाउस और माइट हाउस हो। मम्मा की चाल फ़रिश्तों जैसी थी। आश्रम-वासियों को पता भी नहीं चलता था कि कब मम्मा उनके पास से गुज़र गयीं अथवा कब से वह उनके पीछे खड़ी हुई उनकी एक्टिविटी का निरीक्षण कर रही थीं। मम्मा के बोल बहुत ही मधुर, स्नेहयुक्त और सम्मान-पूर्ण होते थे।

39. मम्मा ने शुरू से अन्त तक अपनी साधना में किसी भी प्रकार की ढील नहीं होने दी। रोज़ दो-ढाई बजे उठकर विशेष शान्ति में रहने का, बाबा को शक्तिशाली रूप में याद करने का अभ्यास करती थीं। उनकी डायरी में ज्ञान के एक-एक विषय पर बहुत गहराई की बात लिखी हुई थी। उनकी डायरी पढ़ने का सुअवसर मुझे जयपुर में मिला था। एक बहन जो एक साल मम्मा के साथ थी उसने मम्मा की डायरी से उन ज्ञान-बिन्दुओं को अपनी डायरी में लिखा था, वह डायरी हमें पढ़ने के लिए मिली थी। उन ज्ञान-बिन्दुओं को पढ़कर मुझे लगा कि मम्मा ने ज्ञान का कितना विचार सागर मंथन किया होगा, कितना ज्ञान की गहराई में गयी होगी और कितना उनको धारणा करने का अभ्यास किया होगा!

40. जैसे कोई चिड़िया घास अथवा अनाज़ के दाने को पहले टुकड़ा-टुकड़ा करती है और बाद में अपने बच्चों के मुँह में डालती है वैसे, मम्मा भी बाबा के गुह्य ज्ञान को पहले अपने में धारण कर, अनुभव कर उसको सहज बनाकर हम बच्चों को सुनाती थीं। मम्मा, ज्ञान को इतना सरल बनाकर सुनाती थीं कि ईश्वरीय ज्ञान से अनजान व्यक्ति को भी ज्ञान सहज समझ में आता था, उसकी बुद्धि में बैठ जाता था और वह ख़ुश हो जाता था।